इकाई 2 प्रवासन, विषमता और सामाजिक परिवर्तन

संरचना

मोंदिरा दत्ता

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 प्रवासन और विषमता

2.4 भारत में मौसमी श्रमिक प्रवासन और विषमता

2.5 प्रवासन और सामाजिक परिवर्तन

2.6 जेंडर, सामाजिक परिवर्तन और विषमताः एक अन्तर्सम्बंध

2.7 सारांश

2.8 इकाई के अंत में कुछ प्रश्न

2.9 संदर्भ

2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

प्रवासन, किसी व्यक्ति का किसी क्षेत्र की प्रशासनिक सीमा के आर-पार आवागमन है जो संबंधित व्यक्ति की इच्छा या बिना उसकी इच्छा के घटित होता है। आधुनिक समय में प्रवासन एक सार्वत्रिक परिघटना बन चुका है। परिवहन और संचान के साधनों के विस्तार के कारण यह शहरीकरण और औद्योगीकरण की विश्वव्यापी प्रक्रिया का एक अंग बन चुका है। अधिकांश देशों में, यह देखा गया है कि औद्योगीकरण और आर्थिक विकास के साथ बहुत बड़े पैमाने पर लोगों का गांव से कस्बों की ओर, कस्बों से अन्य कस्बों की ओर और एक देश से दूसरी देश की ओर आवागमन जुड़ा हुआ है।

जनांकीय दृष्टिकोण से प्रवासन किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि की तीन मूलभूत घटकों में से एक है, और अन्य दो घटक जन्मदर और मृत्युदर हैं। परन्तु जहां जन्मदर और मृत्युदर दोनों जैविक ढांचे के अन्तर्गत प्रचालित होते हैं, प्रवासन इसके अन्तर्गत घटित नहीं होता। यह जनसंख्या के आकार, उसके संघटन और उसके वितरण को प्रभावित करता है। अधिक महत्वपूर्ण यह है कि प्रवासन, उस स्थान के सांस्कृतिक संघटन को परिवर्तित करते हुए लोगों के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित करता है।

शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त (UN High Commissioner for Refugees - UNHCR) के अनुसार, लगभग 4.2 करोड़ प्रवासी अपने गृह समुदायों से बाहर जीवन जी रहे हैं जो संघर्ष, शोषण और हिंसा से कुछ राहत पाने के लिए भागने को मजबूर हुए हैं। शरणार्थियों के प्रवासन के बहुतेरे कारण हैं और उनका स्वरूप भी कई प्रकार का है। इसमें ऐसे लोग भी शामिल हैं जो शरण की तलाश में अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं को पार करते हैं और उनके साथ-साथ ऐसे भी हैं जो आंतरिक तौर पर अपने ही देश में विस्थापित होते हैं। राज्यविहीन लोग, प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित जनसंख्या, जलवायु परिवर्तन से प्रभावित या भविष्य में प्रभावित हो सकने वाले क्षेत्रों में रहने वाले लोग और विकास परियोजनाओं के परिणामस्वरूप अनैच्छिक रूप से पुनर्स्थापित हो जाने वाले लोग भी इन चिंताओं में शामिल रहते हैं।

विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले लोगों के प्रवासन पैटर्न पर किसी भी राष्ट्र की सामाजिक प्रणाली का महत्वपूर्ण प्रभाव हो सकता है। यह लोगों की आर्थिक स्थितियों का निर्धारक भी हो सकता है जो बदले में विषमता को बढ़ावा देता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वैश्विक विषमता मजदूरियों, श्रम बाजार में अवसरों और जीवन शैलियों पर आधारित है। अपने देश में अपनी स्थिति और अन्य अपेक्षाकृत धनी देशों या विकसित स्थानों में अपने जैसे लोगों की स्थितियों में अंतर को कम करने की तलाश में लाखों लाख श्रमिक और उनके परिवारीजन प्रति वर्ष सीमाओं के आर पार, महाद्वीपों के आर पार आवागमन करते हैं। बदले में, विकास के क्षेत्र में यह बढ़ती हुई सहमति है कि प्रवासन, दुनिया के सबसे गरीब राष्ट्रों में बहुत से लोगों के लिए महत्वपूर्ण आजीविका विविधीकरण रणनीति (livelihood diversification strategy) का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें न केवल अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन शामिल हैं बल्कि अपेक्षाकृत गरीब देशों के अन्तर्गत ही होने वाले स्थायी, अस्थायी और मौसमी प्रवासन भी शामिल हैं। पूरे अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में बहुतायत से होने वाली यह बाद वाली परिघटना भी महत्वपूर्ण रूप से विचारणीय है।

फिर भी यह स्पष्ट है कि प्रवासन और सम्भवतः विशेष रूप से अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन एक ऐसी गतिविधि है जो महत्वपूर्ण खतरे (risks) और लागतें (costs) धारित करता है। वैसे तो प्रवासन का कुछ हिस्सा निश्चित रूप से भेजने वाले और अभिग्राही क्षेत्रों के आय और धन असमानताओं में गहरे से जमा हुआ है, परन्तु यह विषमता को आवश्यक रूप से उसी तरीके से कम नहीं करता जिस तरह से अधिकांश प्रवासियों का अभिप्रेत रहता है। बहुत कुछ तो भेजने वाले और अभिग्राही देशों और क्षेत्रों के अन्तर्गत और उनके बीच दोनों में इनकी लागतों और लाभों पर निर्भर करता है। भेजने वाले समुदायों पर प्रवासन के समस्त प्रभाव के रूप में महत्वपूर्ण बात प्रवासन की चयनात्मकता (selectivity) स्वयं भी है। स्पष्ट रूप से यदि अधिकांश प्रवासी, समाज के सबसे गरीब वर्गों से आते थे और उन्हें प्रवासन से निवल (net) लाभ पाना था तो कम से कम इसे आर्थिक विषमता को कम करने के तौर पर काम करना चाहिए था, भले ही अन्य सभी चीजें समान रहतीं। परन्तु प्रवासी हमेशा सबसे गरीब लोग ही नहीं रहे और वे हमेशा लाभ की स्थिति में भी नहीं रहे तथा अन्य कारक भी समान नहीं रहे।

अब हम इस इकाई के उद्देश्यों पर एक नज़र डालेंगे।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई को पूर्णतया पढ़ लेने के बाद, आप इस योग्य होंगे किः

- मानव प्रवासन के तमाम स्वरूपों की पहचान कर सकें;
- प्रवासन के कारणों और उसके प्रभावों पर चर्चा कर सकें; और
- प्रवासन में विभिन्न एजेन्सियों की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाल सकें।

2.3 प्रवासन और विषमता

यह इकाई विषमता के मुद्दों की पड़ताल करती है और श्रम बाजार के लिए जाति और सामाजिक पहचान की भूमिका को अपने अन्तर्गत लाने के लिए उसके विश्लेषण को विस्तृत करती है। ग्रामीण–शहरी प्रवासन का बड़ा कारण है– लोगों के बीच असमानता जो गांवों के बीच और एक गांव में भी अन्तर्वैयक्तिक और अन्तर-पारिवारिक असमानता पर आधारित है। भेजने वाले क्षेत्रों के बीच भी असमानताएं प्रवासन को पैदा करने में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं– अधिक विषमता वाले गांव अधिक प्रवासियों को बाहर भेजते हैं। ये प्रवासी भी

सर्वाधिक उत्पादक आयु समूह से आते हैं जिसके परिणामस्वरूप गांवों के अन्दर असमान शक्ति संरचनाओं को कोई चुनौती नहीं मिलती। अधिक धनी पृष्ठभूमि से आने वाले प्रवासी भी अच्छा करते हैं। इन तथ्यों से यही सुनिश्चित होता है कि प्रवासन विषमता को बढ़ावा देता है।

विभिन्न प्रकार के प्रवासों के विस्तार के आधार पर और विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संदर्भों में जिसके अन्तर्गत प्रवासन घटित होता है; विषमता पर इसके प्रभाव के बारे में कोई अति महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाल पाना कठिन है। वास्तव में ऐसे दोनों उदाहरण मिल सकते हैं जिसमें देखा जा सके कि प्रवासन विषमता को बढ़ाता और घटाता भी है। दरअसल विषमता को ही व्यापक संदर्भों में पारिभाषित करने की जरूरत है बजाय साधारण रूप से आय और धन की विषमता को एकमात्र आधार मानने के। विषमता भी गरीबी की तरह बहु-आयामी है और इसे भी व्यक्तिगत, पारिवारिक, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर मापा जा सकता है। विषमता के सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम तो हैं ही साथ ही शक्ति साधनों तक पहुंच में भी विषमताएं हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि विषमता के सभी पहलू उच्च रूप से जेंडरीकृत हैं। दूसरे शब्दों में विषमता विभिन्न प्रकार की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा निभाई गई भूमिका है, क्योंकि ये सभी प्रायः उन तरीकों के लिए उत्तरदायी हैं जिससे समाजों के अन्तर्गत धन, शक्ति और अवसर का वितरण किया जाता है।

स्पष्ट रूप से विषमता प्रवासन का एक प्रमुख प्रचालक (driver) है। वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन वैश्विक असमानता का एक शक्तिशाली प्रतीक है चाहे वह मजदूरियों, श्रम बाजार के अवसरों या जीवन शैलियों के मामले में ही हो। लाखों लाख मजदूर और उनके परिवार वाले सीमाओं और महाद्वीपों के आर-पार उस स्थिति की तलाश में आवागमन करते हैं, जो उनकी अपनी स्थिति और अन्य दूसरे अपेक्षाकृत धनी देशों में उनके समान मजदूरों की स्थिति में अंतर को कुछ कम कर सके। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 2005 में कुल 19.10 करोड़ अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी थे जो बढ़ते हुए अनुपात में दुनिया के अधिक विकसित क्षेत्रों में संकेन्द्रित थे। इसी प्रकार अपेक्षाकृत गरीब देशों में आन्तरिक प्रवासन चाहे वह स्थायी, अस्थायी या मौसमी हो, दरअसल उन स्थानों के बीच अवसर की वास्तविक असमानता को प्रदर्शित करता है। यह असमानता सिर्फ भेजने वाले और अभिग्राही क्षेत्रों के बीच नहीं होती, जो प्रवासन को प्रोत्साहित करती है। भेजने वाले क्षेत्रों के अन्तर्गत असमानता भी प्रवासन को जन्म दे सकती है, क्योंकि अधिक असमान गांव, अपेक्षाकृत कम असमान गांवों की अपेक्षा अधिक प्रवासियों को पैदा करने की प्रवृत्ति रखते हैं।

अब हम प्रवासन और सामाजिक परिवर्तन के बीच संबंधों का परीक्षण करेंगे। वास्तव में प्रवासन अपने आप में परिवर्तन है और बदले में यह आगे भी भेजने वाले तथा ग्रहण करने वाले दोनों समाजों में रूपांतरण करता है। यहां पर हम इस विश्लेषण के क्षेत्र को राष्ट्रीय सीमाओं के आर-पार होने वाले प्रवासन तक सीमित रखेंगे यद्यपि नीचे आने वाले कई बिन्दु लम्बी दूरी वाले घरेलू आवागमनों पर भी लागू हो सकते हैं। परिवर्तन के एक स्वरूप के रूप में, अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन को भेजने वाले और अभिग्राही – दोनों देशों में कारणों के एक विविध सेटों के परिणामों के रूप में विश्लेषित किया गया है।

विभिन्न क्षेत्रों के बीच अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन पर एकबारगी नज़र डालते हुए, पाकिस्तान और बांग्लादेश दोनों से मिलने वाले साक्ष्य यह सुझाते हैं कि विषमताएं बढ़ी हैं, क्योंकि अपेक्षाकृत धनी व्यक्तियों और गांवों जिनकी पहुंच लम्बी दूरी के प्रवासन तक अधिक थी उन्होंने गरीब क्षेत्रों की अपेक्षा अपनी स्थिति को अधिक समृद्ध किया है। हालाँकि बांग्लादेश के सिलहट के एक गांव तालुकपुर से ब्रिटेन को होने वाले आवागमन के मानव जाति विज्ञान संबंधी

अध्ययन (ethnographic study) में प्रवासन और विषमता के बीच संबंध के गहरे साक्ष्यों ने अधिक जटिल कहानी बयान की है। इसमें गार्डनर (2001) तर्क देते हैं कि 'विदेशों तक पहुँच बढ़ते हुए रूप में ऐसा केन्द्र बन गया जिसके आसपास विषमताएं जुटती गईं। इसने न केवल उन्हें पैदा करने में सहायता दी बल्कि उनके बारे में सोचना भी उसके लिए एक रूपक बन गया है।' उनकी चर्चाएं न सिर्फ आर्थिक विषमताओं से संबंधित करती हैं बल्कि व्यापक तौर पर सामाजिक और सांस्कृतिक अंतरालों से भी प्रवासन को जोड़ती हैं और यह भी कि प्रवासन, विश्लेषणात्मक रूप से स्थिति और ताकत के स्पष्ट उपायों में से एक बनता जा रहा है। फिर भी यद्यपि अपेक्षाकृत धनी परिवारों और अधिक गरीब परिवारों के बीच असमानता बढ़ गई लेकिन यह सबसे धनी – वह कुलीन वर्ग जो शक्ति वाले पदों पर आसीन हैं– और तमाम अपेक्षाकृत गरीब परिवारों – जो पहले प्रायः इस कुलीन वर्ग पर आर्थिक और सामाजिक सहायता के लिए निर्भर रहते थे, लेकिन अब बहुत अच्छे हो चुके हैं, के बीच यह कम हुआ है।

इसके लिए एक कारण यह है कि मूलतः तालुकपुर से प्रवास करने वाले किसी भी तरह सबसे धनी नहीं थे– बल्कि वास्तव में कुछ तो भूमिहीन तक थे, क्योंकि परम्परागत तौर पर भूमि को ग्रामीण बांग्लादेश में धन के प्रमुख संकेतक के तौर पर देखा जाता रहा है। व्यवहार में, तालुकपुर में प्रवासन अपने साथ भूस्वामित्व में उल्लेखनीय परिवर्तनों को लेकर आया। जो लोग पहले से भूमि पर अधिकार रखते थे वे प्रायः और अधिक खेत पर कब्जा कर लिए और छोटे से बड़े भूस्वामी बन गए, जबकि जो लोग बिल्कुल भूमिहीन थे उनमें से कुछ किसी तरह गांव के सबसे समृद्ध परिवारों की स्थिति में स्वयं को लाने में सफल हो गए। इस संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन तक पहुंच, विशेषकर लंदन तक पहुंच, इस तरह के सामाजिक और आर्थिक ताकत के परिणाम में भूस्वामित्व के रूप में सामने आया। प्रवासन, साधारण तौर पर सिर्फ पैसे की बजाय, विदेश से आने वाले धन के रूप में और भी बहुत कुछ लेकर आया; अपने साथ यह 'सांस्कृतिक पूँजी' और सामाजिक प्रतिष्ठा लेकर आया। बदले में, विदेश से आने वाले धन को राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ताकत पर व्यापक प्रभाव के साथ जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी प्रवेश मिला। वास्तव में, अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में मुद्रास्फीति (श्रम, वस्तु और तकनीकी) ने भूमि के छोटे टुकड़ों को आर्थिक रूप से जीवनयापन के लिए कठिन बना दिया है।

बांग्लादेश में जैसा कि अन्य जगहों पर, तमाम सिलहटियों ने अपनी भूमि खो दी और यह परिघटना 'लंडोनी गांवों' में ज्यादा तीव्र रही। फिर भी जैसा कि प्रवासियों और गैर-प्रवासियों के बीच ध्रुवीकरण बढ़ता है, वह स्पष्ट तौर पर आर्थिक स्थिति (economic position) और पदस्थिति वर्गीकरण (status classification) के बीच सुसंगत ढंग से प्रतीत नहीं होता। गांव में प्रवासी और गैर-प्रवासी परिवारों के बीच प्रमुख अंतर – सहज रूप से दिखाई देने वाले विदेशी वस्तुओं का उपभोग था, जो गार्डनर के अनुसार 'सहायता और विदेश से आने वाले धन पर देश की आर्थिक निर्भरता और अंतर्राष्ट्रीय पूंजीवाद के आधिपत्यशील ताकत को प्रदर्शित करता है।' इस ताकत के कुछ भाग पर दावा करते हुए प्रवासी अनिच्छापूर्वक या अनजाने में ही उस वृहत्तर विषमताओं की ओर इशारा करते हैं जो हमारी दुनिया की संरचना करता है।

अन्तर-ग्रामीण विषमताओं के अतिरिक्त, सिलहट में प्रवासी और गैर-प्रवासी गांवों के बीच बढ़ती विषमताओं के बारे में भी कुछ अवलोकन किए जा सकते हैं। विशेष रूप से, जिन गांवों ने उच्च स्तर पर 'लंडनी' प्रवासन का अनुभव किया है अब आश्चर्यजनक रूप से अलग हैं। वहां सभी मकान पत्थरों के बने हुए हैं, कभी-कभी तो दो या तीन मंजिले ऊंचे हैं और बाकी ग्रामीण बांग्लादेश के अधिकतर भागों की गरीबी के विपरीत विस्तीर्ण भौतिक

समृद्धि का प्रदर्शन कर रहे हैं। गांवों के बीच बढ़ती हुई विषमता का एक दूसरा स्पष्ट संकेत शिक्षा है, जैसा कि तालुकपुर में 'आधुनिक' शिक्षा प्रतिष्ठा का प्रमुख संकेत हैं और गांव में साक्षरता का स्तर अपेक्षाकृत बहुत अधिक है– पुरुषों के लिए राष्ट्रीय औसत से दोगुने से भी अधिक और महिलाओं के लिए राष्ट्रीय औसत से डेढ़ गुना– मुख्यतः प्रवासी परिवारों के बढ़े हुए धन के परिणामस्वरूप है। खाड़ी के देशों की ओर बढ़ता हुआ अस्थायी प्रवासन का भी विषमता पर समान प्रभाव है क्योंकि व्यापक तौर पर गरीब लोग इस प्रकार के प्रवासों से बाहर ही हैं।

अगर केरल की ओर नज़र डालें तो अपेक्षाकृत एक अलग शोध परियोजना– *केरल प्रवासन अध्ययन*– भी अंतर्राष्ट्रीय और आंतरिक प्रवासन और भेजने वाले क्षेत्रों में विषमता के बीच संबंध के विभिन्न पहलुओं पर काफी साक्ष्य प्रदान करती है। 1998 में आयोजित 10,000 परिवारों पर प्रतिदर्श सर्वेक्षण (sample survey) पर आधारित, यह इस क्षेत्र में अपनी तरह का सम्भवतः सबसे बड़ा अध्ययन है। यह दिखलाता है कि केरल ने प्रवासन में बड़े पैमाने पर वृद्धि का अनुभव किया, जो राज्य में सर्वाधिक समृद्ध 'उद्योगों' में से बन चुका है। लेखकों (जकारिया, मैथ्यू और राजन, 2000) का दृढ़ता से कहना है कि 'केरल में किसी और कारक की अपेक्षा प्रवासन ने गरीबी उन्मूलन और बेरोजगारी में कमी लाने में अधिक योगदान दिया है।' इसने गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों की संख्या में 12 प्रतिशत की कमी लाई है और बेरोजगारी दर 30 प्रतिशत की दर से गिरा है। इसके समर्थन में कुछ बातें इस तथ्य से भी आती हैं कि 1998 में विदेश से आने वाला धन राज्य की कुल जीडीपी के 10 प्रतिशत के बराबर था, जो राज्य द्वारा केन्द्र से बजट सहायता के रूप में पाए धन का भी दोगुना था और राज्य के दो प्रमुख उद्योगों– समुद्री भोजन और मसालों के सम्मिलित निर्यात से भी अधिक था।

केरल प्रवासन अध्ययन (Kerala Migration Study), गैर-प्रवासी परिवारों, भारत में रह गए अन्तर-राज्य प्रवासियों और अंतर्राष्ट्रीय प्रवासियों, जिनमें से अधिकांश खाड़ी देशों में चले गए, के बीच अवसरों और जीवनयापन के स्तरों में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अन्य मामलों के समान यह दिखलाता है कि प्रवासन भी सामान्यतया नौजवान, शिक्षित पुरुषों के प्रति चयनात्मक रहा है यद्यपि उत्प्रवासियों और अन्तर-राज्यीय प्रवासी प्रवाहों दोनों में महिलाओं का अनुपात बढ़ता हुआ पाया गया। मजे की बात यह है कि यह ऐसे प्रवासन पैटर्न को प्रदर्शित करता है जो विभिन्न धार्मिक और नृजातीय समुदायों के बीच उल्लेखनीय रूप से अंतर करता है– और इस तरह खाड़ी देशों की ओर प्रवास करने वालों में मुस्लिमों की संभावना औसत की अपेक्षा दोगुना होता है जबकि भारत के अन्तर्गत ही प्रवास करने में सीरियाई ईसाइयों की संभावना दोगुनी होती है। इसके विपरीत, अनुसूचित जातियों से दोनों ही जगहों प्रवास करने वालों की संभावना बहुत कम है। इसी तरह यद्यपि स्नातकधारी, गैर स्नातकों से अधिक संभावी प्रवासी हैं परन्तु जिनके पिता शिक्षित हैं उनमें इसका ठीक उल्टा भी सत्य है।

दुर्भाग्य से यह अध्ययन हमें परिवर्तित होते आर्थिक विषमताओं पर प्रत्यक्ष रूप से देखने की सलाहियत नहीं देता क्योंकि प्रवासन से पहले प्रवासियों और प्रवासी परिवारों के आर्थिक हालात के बारे में कुछ दर्ज ही नहीं किया गया है। हालाँकि अध्ययन यह दिखलाता है कि जिन्होंने प्रवास कर लिया वे उनकी अपेक्षा अधिक अच्छा कर सके जिन्होंने प्रवास नहीं किया। उदाहरण के लिए, प्रवासी परिवारों में खाद्य पदार्थों के उपभोग का स्तर उच्चतर था, उनके पास बिजली होने की, अपनी भूमि होने की और भूमि सुधार में निवेश करने की संभावना अधिक थी, और निजी अस्पतालों में इलाज करवाने की संभावना भी अधिक थी। हालाँकि, प्रति व्यक्ति विदेश से आने वाले धन से विस्थापन से पूर्व प्रवासियों के शैक्षणिक

स्तर का अनुगमन करते हुए प्रतीत होता है, जिसका निष्कर्ष यह है कि सर्वाधिक शिक्षित व्यक्ति घर पर सबसे अधिक राशि भेजता है। यह बात सीरियाई ईसाइयों के आंतरिक प्रवासियों में अधिक स्पष्टता से परिलक्षित होती है जिनमें खाड़ी देशों की ओर प्रवास करने वाले मुस्लिमों, जिनका शैक्षणिक स्तर कमतर थे, की अपेक्षा बेहतर शिक्षित होने की प्रवृत्ति थी।

2.4 भारत में मौसमी श्रमिक प्रवासन और विषमता

आगे उल्लिखित केस स्टडी, पश्चिम बंगाल और पश्चिमी भारत में आंतरिक प्रवासों के बारे में हाल में हुए अध्ययनों से जटिल और कुछ मामलों में परस्पर विरोधी कहानी सामने आने पर चिंता प्रकट करती है। पश्चिम बंगाल में मौसमी श्रमिक प्रवासन के संबंध में यह पाया गया कि 'कुल मिलाकर श्रम बाजार के इस हिस्से की कार्यप्रणाली नियोजकों के रूप में विषमता बढ़ाने की संभावना वाली होती है' अधिक-संग्रहकारी उत्पादन को सुविधा प्रदान करती है– विशेष रूप से बड़े स्तर के नियोजकों का जबकि अधिकांश प्रवासी मजदूर उसी स्थान पर बने रहने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं।' बाहर से आने वाला धन विषमता बढ़ाने– विशेष रूप से भूमिहीन परिवारों के लिए – के संदर्भ में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह उल्लेखनीय है कि ऐसे बहुत ही कम मामले हैं जिसमें मौसमी प्रवासन ने किसी व्यक्ति विशेष को उपरि आर्थिक गतिशीलता की ओर बढ़ाया हो। विशेष तौर पर मुर्शिदाबाद जिले में, पुरुष साधारणतया अयाचित तरीके से गमन करते हैं और किसी नियोजक के साथ बिना किसी पूर्व समझौते के भी – और इस तरह वे बड़ी अनिश्चितता का सामना करते हैं। लगभग सभी प्रवासी परिवार बाहर से आने वाले नकद धन का उपयोग भोजन और कर्ज चुकाने में करते हैं। मौसमी प्रवासी मजदूर, जब काम के लिए बाहर जाते हैं तो एक तरह से स्वास्थ्य सेवाओं के सरकारी प्रावधानों और शिक्षा से बहिष्कृत कर दिए जाते हैं। जीवन की स्थितियों और कार्य की तीव्रता तथा प्रकृति को मिलाकर एक साथ देखने से अर्थ निकलता है कि प्रवासियों का स्वास्थ्य उनसे अधिक खराब होता है जो पीछे वहीं रह जाते हैं।

हालांकि पश्चिम बंगाल में इस स्वरूप वाले मौसमी प्रवासन ने भी श्रम बाजार में प्रवासियों की समग्र ताकत को बढ़ाया और लम्बे समय से अनछुए ताकत के संबंधों को स्वयं श्रमिकों के पक्ष में परिवर्तित किया। उदाहरण के लिए, पुरुलिया जिले में जमींदार और श्रमिक वर्गों के बीच संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। खेतिहर और अन्य मजदूरों के लिए मौसमी रूप से बाहर प्रवास करने के लिए बढ़े हुए अवसरों ने इन मजदूरों द्वारा आजीविका के विविधीकरण में बहुत योगदान दिया और परिणामस्वरूप जमींदार वर्ग के प्रति उनकी मजबूरियों को कम किया। एक परिणाम यह भी हुआ कि खेती के लिए व्यस्ततम समय में मजदूरों की कमी हो गई, जिससे क्षेत्र में जमींदार और मजदूरों के बीच होने वाली संविदाओं में मजदूरों के लिए लाभदायक परिवर्तन किए गए। इस श्रमिक बाजार समायोजन ने मजदूरों के लिए उनके नियोजकों को लेकर अधिक विकल्प दिए परिणामस्वरूप उन्हें अधिक लाभ पाने या उच्चतर मजदूरी पाने के लिए ज्यादा शक्ति मिल गई।

इसके विपरीत पश्चिमी भारत में, इस प्रकार के मजदूरों के विकल्प के अवसर बहुत ही सीमित रहे क्योंकि नियोजक प्रायः संगठित होकर कार्य करते थे। दक्षिण गुजरात के बारदोली तालुका के मामले में जहां गन्ना उत्पादक नियोजकों ने 'अत्यधिक संगठित भर्ती प्रक्रिया' बनाए रखी, मजदूरों द्वारा व्युत्पन्न लाभों की सीमा बहुत कमतर रही। इस दौरान जनजातीय पश्चिमी भारत में भील प्रवासी परिवारों के एक छोटे अल्पसंख्यक समूह के लिए यही बात बचत, निवेश और आकस्मिकताओं को पूरा करने के तौर पर लाभ ही लाभ की

रही। लेकिन दूसरी ओर बहुसंख्यक गरीबों के लिए प्रवासन फिर से एक बार रक्षात्मक समायोजन की रणनीति बना जो साधारण तौर पर उन्हें चरम आर्थिक सुभेद्यता (economic vulnerability) से लड़ने की सलाहियत प्रदान करती है। भील गांवों का समान रूप से गरीब रूप-रंग का दिखावा उनके बीच धन, पदस्थिति और ताकत के महत्वपूर्ण अंतरों को छिपा लेता है जो संगठन पर एक तरह से देनदारी की तरह होता है और मजदूरों के मौसमी प्रवासन का सीधा परिणाम होता है।

इस क्षेत्र में प्रवासन की सफलता, भर्ती करने वाले नेटवर्क तक पहुंच या भाई-भतीजावाद तक पहुंच पर अत्यधिक निर्भर करती है और बिना इन नेटवर्क के प्रवासी लोग प्रायः अत्यल्प मजदूरी, कमतर विश्वसनीयता वाले काम कर पाते हैं और शोषण हेतु सर्वाधिक सुभेद्य स्थिति में होते हैं। वास्तव में अधिक साधारण रूप में यहां भर्ती तंत्र (system of recruitment) कर्ज और निर्भरता को बहुत बढ़ा देता है और अधिकांश प्रवासियों को उनके कर्ज से बाहर निकलने के अतिरिक्त कहीं और काम करने से रोक देता है। इस संदर्भ में, ठीक उतने ही समय तक काम करने वाले भील प्रवासी बहुत ही अलग परिणामों पर पहुंच जाते हैं। अधिकांश मजदूरों के लिए कई वर्षों तक मौसमी प्रवास के बावजूद उनकी संपत्तियों में कोई दीर्घावधि वृद्धि नहीं होती और न ही उनकी गरीबी में कोई कमी आती है।

यदि प्रवासी बहुत लम्बे समय तक अपने जन्मस्थान या स्थायी गांव से अनुपस्थित रहे और गांव के महत्वपूर्ण घटनाओं में भाग लेने में असफल रहे तो प्रवासन, विभिन्न प्रकार की सामाजिक स्थितियों और पदस्थितियों से हानि के रूप में भी आगे ले जाता है। यह स्थिति कर्ज और सामाजिक समूहों से बहिष्करण को भी बढ़ावा देता है। हालांकि कुछ थोड़े मामलों में प्रवासन एक परिवार की आय क्षमता और कर्ज पाने की उसकी योग्यता को बढ़ा सकता है और उन्हें मशीनरी, भूमि या सामाजिक समूहों में निवेश करने की छूट देता है जिससे उसकी सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। बहुत ही कम परिवारों के लिए प्रवासन ऊपर की ओर गतिशीलता के साधन प्रदान करता है और कुछ परिवारों के लिए वृहत्तर आजीविका सुरक्षा (greater livelihood security) प्रदान करता है। रिपोर्ट कहती है कि प्रवासन उन श्रमिकों की स्थिति को मजबूत करता है जो विशेष रूप से समूह के नेता और 'भरती करने वाले' (सगे संबंधियों की मंडली के माध्यम से) बन सकें।

पश्चिम बंगाल में ग्रामीण—ग्रामीण प्रवासन और पश्चिमी भारत में ग्रामीण—शहरी प्रवासन के दो अध्ययनों के बीच विषमता के संदर्भ में अलग-अलग परिणाम मिलने के दरअसल बहुतेरे कारण हैं। पश्चिम बंगाल में प्रवासी लोग श्रमिक भरती वाले क्षेत्रों में समूहों में यात्रा कर सके जहां नियोजक और मजदूर इकट्ठा होते हैं और फिर मजदूरी तथा अन्य लाभों पर सौदेबाजी संभव होती है। यदि प्रवासी इस मामले में भाग्यशाली रहें और किसी ऐसे दिन वहां आएं जब नियोक्ताओं की संख्या अधिक हो परन्तु मजदूरों की कम तो मजदूरों की सौदेबाजी की ताकत एकाएक बहुत बढ़ जाती है। वास्तव में ऐसे भी मामले होते हैं जब प्रवासी मजदूर किसी काम को छोड़कर भागने की धमकी देते हैं या फिर काम छोड़कर निकल जाते हैं जिसका एक अर्थ यह भी होता है कि वहां वैकल्पिक अवसर भी उपलब्ध हो सकते हैं।

इसके विपरीत, पश्चिमी भारत में जनजातियों के लिए मौसमी प्रवासन ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर होता है। शहरी अनौपचारिक श्रम बाजार के अन्तर्गत काम 'नृजातीय' (ethnic) प्रकार में अत्यधिक विभेदित होता है और भील लोग इस सुस्पष्ट रोजगार क्षेत्र में कब्जा कर लेते हैं जो अल्प वेतन वाला और अकुशल काम वाला होता है। वे लोग स्पष्टतया दूसरे श्रम बाजारों में प्रतियोगिता करने में अनिच्छुक या अयोग्य होते हैं और उसकी बजाय अपने गांवों

से सीधे भरती कर लिए जाते हैं। ऐसी स्थिति में, पश्चिम बंगाल के मामले की अपेक्षा यहां पास पड़ोस और रिश्तेदारों का नेटवर्क बड़ी मात्रा में रोजगार की संरचना में शामिल होते हैं और यह तथ्य नियोजकों के बीच प्रतियोगिता को कम करता है और मजदूरी को कमतर रखता है। यह गतिशीलता के अवसर को भी खत्म कर देता है जो पश्चिम बंगाल वाले मामले में दिखता है और नियोजकों के लिए विचारपूर्वक चयनित, जिम्मेदार और सहजता से निर्भर कार्यबल सुनिश्चित करता है।

पश्चिम बंगाल के श्रम बाजार में मजदूर लोग जिस हद तक विकल्पों को अपना सकते थे वह पश्चिमी भारत जैसे सामाजिक और आर्थिक रूप से निर्भर कार्यबल वाले संरचित आकस्मिक श्रम बाजार (structured casual labour market) में संभव नहीं थी। इस प्रकार पश्चिम बंगाल से भिन्न भील प्रवासियों के लिए अनियत दिहाड़ी मजदूरों की उच्च मांग भी उनके मजबूत सौदेबाजी वाली शक्ति में नहीं बदल सकी। इसका अर्थ है कि इस बात की भी कम ही संभावना है कि स्वयं प्रवासन में मजदूरों के उद्धारकर्ता वाला प्रभाव भी हो सकता है। इसके विपरीत मोस्से तर्क देती हैं कि 'प्रवासन के माध्यम से ये मजदूर एक ऐसी दुनिया में चले जाते हैं जिसमें वर्गीकृत भेदभाव (भील / गैर–भील; जनजातीय / गैर-जनजातीय) अधिक तीव्रता से महसूस की जाती है, उसे सामान्यीकृत किया जाता है और बढ़ाया भी जाता है; एक ऐसी दुनिया जिसमें गरीबी की संस्कृति को *जातिगत* (जाति / 'नृजातीय') भेदभाव की तरह नए रूप में अनुभूत किया जाता है।'

बॉक्स सं. 2.1

पश्चिम भारत के मामले में महसूस होता है कि प्रवासन ने भील महिलाओं के उत्थान के लिए बहुत ही थोड़ा काम किया। जेंडर संरचनाओं की प्रवृत्ति ज्यों की त्यों बने रहने की थी और महिलाएं सवेतन मजदूरी के साथ-साथ घरेलू भूमिका में बनी रहीं। श्रमिक प्रवासन में महिलाओं और वृद्ध लोगों की भागीदारी सीमित होती है और प्रवासियों की आय पर बढ़ी हुई निर्भरता परिवारों में पुरुष सत्ता को बढ़ाती है, क्योंकि पुरुषों पर नकद और स्वास्थ्य देखभाल के लिए निर्भरता बढ़ जाती है। इस मामले में प्रवासन जेंडर विषमताओं को बढ़ा सकती है।

ऐसी परिस्थिति में भरती करने वालों और उनके सगे संबंधियों से संबंध अति महत्वपूर्ण होता है और मजदूरों की भरती प्रक्रिया आय तक असमान पहुंच को सुनिश्चित कर सकती है। जिनके पास नियमित काम पाने के लिए स्थिर संबंध या नेटवर्क नहीं होते, उन्हें सर्वाधिक अनियत और सबसे कम वेतन वाले कार्यों में धकेल दिया जाता है। और ऐसे नेटवर्क के बिना प्रवासियों के पास जीवन की व्यवस्थाएं करने में समस्याएं भी आ जाएंगी, वे धमकियों के प्रति अधिक सुभेद्य भी हो जाते है और उन्हें कम वेतन मिलता है या बिल्कुल भी वेतन नहीं मिलता और अंततः वे अलगाव और अकेलेपन के शिकार हो जाते हैं।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1) प्रवासियों के मध्य विषमता से आप क्या समझते हैं?

2) मौसमी श्रमिक प्रवासन और विषमता की सुस्पष्ट विशेषताओं को लिखिए।

3) भारत से ऐसे उदाहरण दीजिए जहां से लोग विषमता के चलते प्रवसित हुए हैं।

अब हम प्रवासन और सामाजिक परिवर्तन के बीच संबंध के बारे में चर्चा करेंगे।

2.5 प्रवासन और सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक परिवर्तन के कारण के रूप में प्रवासन को एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया है जो मूल्य/मानदण्ड रूपांतरण के लिए इसकी संभाव्यता पर जोर देता है और दूसरे संरचनात्मक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया गया है जो इसके जनांकिकीय और आर्थिक महत्व को रेखांकित करता है। परिवर्तन का अध्ययन, विषय क्षेत्र के आधार पर बदलता रहता है जैसे कि व्यक्तियों और परिवारों के सूक्ष्म स्तर (micro-level) पर केन्द्रित रहते हुए; समुदायों और क्षेत्रों के मध्यम स्तर (meso-level) पर; और राष्ट्र–राज्य और वैश्विक अर्थव्यवस्था के स्थूल स्तर (macro-level) पर केन्द्रित रहते हुए। जैसे विश्लेषण का विषय क्षेत्र परिवर्तित होता है, ठीक उसी तरह प्रवासन के चलते परिवर्तन की प्रक्रियाओं की गहराई भी परिवर्तित होती है। साधारण रूप से प्रभाव सिर्फ समाज के ऊपरी सतह को छू सकते हैं या शक्ति के वितरण का रूपांतरण करते हुए सामाजिक संरचना में हेरफेर कर सकते हैं। ऐसे गम्भीर रूपांतरण शुद्ध रूप से वही हैं जिससे अभिग्राही समाजों में प्रवासन के विरोधी डरते हैं और परम्परागत तौर पर जिसके विरुद्ध निंदा करते हैं।

परिवर्तन को लाने के लिए प्रवासन की शक्ति या तो भेजने वाले या अभिग्राही क्षेत्रों और देशों में तीन प्रमुख कारकों पर निर्भर करती हैः

अ) प्रवासन में भागीदार संख्या;

ब) आवागमन की अवधि;

स) इसका वर्ग संघटन।

यदि प्रथम कारक पर ध्यान दें तो यह स्पष्ट है कि छोटे विस्थापनों की बहुत थोड़ी कारणात्मक शक्ति होती है, जो कदाचित ही प्रवासन में भागीदार लोगों और उनके निकट संबंधियों से बाहर कहीं असर डालती हो।

अमेरिका और यूरोप में आज, आप्रवासन (immigration) के विरोधियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया भय प्रवासन को सामान्यतया इस तरह चित्रित करता है कि जैसे गरीब देशों से उभरते हुए लोग पूरी दुनिया में और खासतौर से विकसित दुनिया की सामाजिक प्रणाली और संस्कृति को कुचल डालेंगे। ऐसे भयों को सीधे तौर पर संख्याओं के आंकड़ों के बल पर खारिज कर दिया जाता है– 6 अरब की धरती पर मुश्किल से 20 करोड़ प्रवासी हैं और उनमें भी उन्नत देशों में जाने वाले अल्पसंख्यक ही हैं। दूसरी ओर इसे अभिग्राही समाजों की तीव्र परिवर्तन से अपने को बचा लेने की क्षमता के बल पर भी इसे खारिज किया जा सकता है। दूसरे कारक पर ध्यान देते हुए कहा जा सकता है कि स्थायी विस्थापनों की अपेक्षा छोटी समयावधियों का वर्तुल प्रवाह (circular flow) कम टिकाऊ परिवर्तन को उत्पन्न करने की ओर प्रवृत्त होता है। कुछ शर्तों के अधीन, वर्तुल आवागमन (cyclic movement) वर्तमान सामाजिक संरचनाओं को बदलने की अपेक्षा उन्हें ही प्रबलित कर सकती हैं। ऐसा घटित हो सकता है, उदाहरण के लिए जब प्रवासी मजदूरों की आय घर पर ग्रामीण उत्पादक संरचनाओं के विकास को सहारा देती है तो यह उनकी लम्बी अवधि की व्यवहार्यता को भी मजबूत करती है। ठीक इसी प्रकार 1960 के दशक और 1970 के दशकों में पश्चिमी यूरोप में हुए अस्थायी श्रमिक प्रवासन ने इसके आर्थिक विस्तार को महत्वपूर्ण ढंग से सहायता दी थी– वह भी यूरोपीय सामाजिक संरचनाओं या संस्कृतियों में बिना अधिक क्षति पहुंचाए– जब तक कि उस कार्यक्रम के अनिवार्य अन्त ने अस्थायी कामगारों को स्थायी प्रवासियों में नहीं बदल दिया।

स्थायी बाह्य-प्रवासन (permanent out-migration) भेजने वाले समाजों की जनांकिकीय संरचना को महत्वपूर्ण ढंग से पलट सकती है, जैसे कि जब पूरा क्षेत्र ही अनिवेषित रह जाए। स्थायी प्रवासियों का भी भेजने वाले क्षेत्रों पर अधिक मजबूत प्रभाव हो सकता है। स्थायी प्रवासी स्थानीय उत्पादन प्रणालियों को कमजोर करते हुए और संस्कृति को बाह्य-प्रवासन की दिशा में इस तरह परिवर्तित कर सकते हैं कि ऊपर की ओर गतिशीलता के लिए एकमात्र मानक रास्ता वही हो, जो प्रवासियों ने अपनाया। किसी भी आकार का एक बसे हुए स्थायी आप्रवासी जनसंख्या (permanent immigrant population) के पास भी मेजबान समाजों की संस्कृति और सामाजिक संरचना में वृहत्तर प्रभाव हो सकता है, जैसे कि तुर्कों, मोरक्को वासियों और अल्जीरिया वासियों का पश्चिमी यूरोप में वर्तुल प्रवासन से स्थायी आप्रवासन में रूपांतरण से और अमेरिकी-मेक्सिकन सीमा के आर पार होने वाले आवर्ती श्रमिक प्रवासन (cyclical labour migration) का अंत हो जाने से बिल्कुल स्पष्ट है; जिसने अमेरिका में स्थायी अनाधिकृत प्रवासी जनसंख्या (permanent unauthorised migrant population) के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

प्रवासियों के प्रवाह का संघटन भी प्रवासन के परिवर्तन सामर्थ्य को अनपेक्षित तरीकों से प्रभावित करता है। कोई तर्क दे सकता है कि उच्चतर मानव पूँजी (higher human capital) से लैस व्यक्तियों से संघटित आवागमनों का, अपने को अभिव्यक्त करने और अपने सांस्कृतिक लक्षणों को संरक्षित करने की ऐसे प्रवासियों की वृहत्तर क्षमता के चलते, अभिग्राही समाजों पर वृहत्तर प्रभाव हो सकता है। वास्तव में इसका विपरीत भी घटित होने को प्रवष्त्त होता है क्योंकि शिक्षित प्रवासियों में वृहत्तर नम्यता और अभिग्राही संस्कृति को अंगीकृत करने की वृहत्तर क्षमता होती है, क्योंकि वे प्रायः इनकी भाषा में धारा प्रवाह होते हैं। वृहत्तर मानव पूंजी श्रम बाजार में बेहतर अवसरों और अभिग्राही समाज के आर्थिक

मुख्यधारा में आसान प्रवेश के रूप में रूपायित होता है। इसके विपरीत, कमतर शिक्षित कामगारों से संघटित प्रवाहों में मेजबान भाषा और संस्कृति और प्रवृत्ति के प्रति प्रारम्भिक अनजानेपन के चलते, विशेषकर ग्रामीण मूल से आने वाले प्रवासियों के मध्य जो अपने प्रथाओं से बहुत गहराई से जुड़े होते हैं, अधिक स्थायी प्रभाव हो सकता है। प्रवासी मजदूरों का विशालकाय प्रवाह प्रत्यक्ष सांस्कृतिक-भाषायी संकेन्द्रणों (cultural-linguistic concentrations) को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति रखता है सामान्यतया मेजबान समाजों के हाशिए वाले क्षेत्रों में। ऐसी 'बस्तियां' (ghettos) देशी लोगों के प्राकृतिक लक्ष्य बनते रहते हैं जो उन्हें प्रवासियों के घटिया सांस्कृतिक या जैविक प्रतिभा के मूर्त साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

अंततः, ऐसे प्रवाह जो वर्ग-विविध (class-diverse) होते हैं जिसमें उच्च और निम्न दोनों मानव पूंजी प्रवासी शामिल होते हैं, अभिग्राही देशों में संस्थागत रूप से पूर्ण नृजातीय अन्तःक्षेत्रों (ethnic enclaves) की वृद्धि की संभावना रखते हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि कुशल आप्रवासी अपने सह-नृजातियों (co-ethnic) की बड़ी संख्या का उपयोग करते हुए ऐसे उद्यम स्थापित करने में सक्षम होते हैं जो बाजार और श्रम का स्रोत दोनों हो; बदले में इन नृजातीय उद्यमों (ethnic enterprises) में कमतर शिक्षित आप्रवासी रोजगार अवसरों का वैकल्पिक स्रोत पा जाते हैं और यहां तक कि छोटे व्यावसायिक प्रबंधन के गुर सीखने के लिए एक ''प्रशिक्षण मशीनरी (training mechanism)''।

संस्थागत रूप से पूर्ण अन्तःक्षेत्र, प्रवासन द्वारा मेजबान समाजों पर काढ़े गए परिवर्तन के सर्वाधिक स्पष्ट स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करता है। हालाँकि ऐसी रचनाओं की अवधि महत्वपूर्ण ढंग से भिन्न-भिन्न होती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में उनकी प्रवृत्ति दो या तीन पीढ़ियों से अधिक की नहीं होती क्योंकि आप्रवासी उद्यमियों (immigrant enterpreneurs) की सफलता उनकी संततियों को मेजबान देश की आर्थिक मुख्यधारा में लाभ की स्थितियों की ओर धक्का दे देती हैं। जर्मनी और अन्य यूरोपीय देशों में कुछ लेखाओं के अनुसार, आप्रवासी अन्तःक्षेत्र कुछ अधिक लम्बी अवधि तक चलते प्रतीत होते हैं।

बॉक्स सं. 2.2

सबसे पहली आद्यप्ररूपीय अन्तःक्षेत्र (archetypical enclave) जारकालीन रूस से निकाले गए यहूदियों द्वारा न्यूयार्क शहर में निर्मित किया गया था। बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में लगभग 20 लाख रूसी यहूदी पेल ऑफ सेटलमेंट (Pale of Settlement) से अमेरिका प्रवसित हुए थे। पेल ऑफ सेटलमेंट में उन्हें जार शासन द्वारा बंदी बनाकर रखा गया था, जहां वे बारम्बार होने वाली सामूहिक हत्याओं के दहशत में जी रहे थे। उस समय के इटालियन और अन्य प्रवासी मजदूरों से भिन्न रूसी यहूदी वर्ग-विविध थे। उनके बीच भी कुशल कलाकार और व्यापारी बहुतायत से थे और उन्होंने अपने को व्यवसाय में स्थापित करने के लिए अपने संसाधनों का प्रयोग किया। पहले उन्होंने उदार फेरीवालों की तरह काम करना शुरू किया और धीरे-धीरे पूंजीवादी पदसोपान तक पहुंच गए। 1930 के दशक के मध्य तक, संस्थागत रूप से पूर्ण एक यहूदी अन्तःक्षेत्र निचले पूर्वी मैनहट्टन क्षेत्र में विकसित हुआ जहां धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाएं कुकरमुत्तों की तरह उग आईं। एक नृजातीय प्रेस अंग्रेजी में और एक यिद्दिस (Yiddish) में पल्लवित हुआ और जहां सूईयों का व्यापार 'महान यहूदी धंधा (great Jewish metier)' बनकर उभरा।

कुछ थोड़े से वर्षों के बाद, उस समय समृद्ध प्रवासियों के बच्चे पूर्व-तटीय विश्वविद्यालयों में धावा बोलकर प्रवेश पाने लगे और उसमें भी न्यूयार्क की सिटी यूनिवर्सिटी उनकी

शैक्षणिक और व्यावसायिक महत्वाकांक्षाओं के मुख्य केन्द्र में रहती थी। 1960 के दशक तक यहूदी निचला पूर्वी तट (Jewish Lower East Side) एक याद बनकर रह गया था परन्तु यहूदियों की तीसरी पीढ़ी के सदस्य तब तक शहर के उच्चतर व्यावसायिक और व्यवसाय पदस्थिति में अच्छे से स्थापित हो चुके थे। उनकी शिक्षा और आय ऐंग्लो-अमेरिकन सहित अन्य दूसरे नृजातीय समूहों (ethnic groups) की अपेक्षा कहीं बहुत अधिक हो चुकी थी।

एक अधिक समकालीन उदाहरण क्यूबा से मिआमी को निष्क्रमण (Cuban exodus to Miami) द्वारा मिलता है। यहूदियों की तरह क्यूबा द्वीप से बाहर होने वाला यह उत्प्रवासन (emigration) वर्ग-विविध था, जिसका नेतृत्व पुराने उच्च और मध्यम वर्ग द्वारा किया गया था जो राजनीतिक क्रांति से बचना चाहते थे। बाद में द्वीपीय जनसंख्या के निम्नतर स्तरों ने भी कुलीनों का अनुगमन किया, और सभी दक्षिण फ्लोरिडा में जाकर इकट्ठा हुए। कुछ वर्षों में एक नृजातीय अन्तःक्षेत्र ने नियंत्रण लेना शुरू कर दिया था और 1990 के दशक तक यह 72,000 क्यूबाई मालिकाना फर्मों द्वारा पुष्ट किया हुआ एक सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक संकुल के रूप में उभर चुका था। वर्ष 2000 तक 1960 के दशक और 1970 के दशक में पहुंचे क्यूबाई प्रवासियों की आय देशीय गोरे लोगों और उन क्यूबाई व्यवसाय मालिकों के बराबर हो चुकी थी जो उस क्षेत्र में सबसे ऊंचे थे। क्यूबाई निर्वासित, उस क्षेत्र में किसी अन्य नृजातीय समूह की अपेक्षा स्व-रोजगार में सबसे ऊँचे दर वाले थे। दूसरी पीढ़ी के क्यूबाई, उच्च औसत आय का प्रदर्शन करते हुए भी, व्यवसाय के मालिकाना हक में निम्नतर स्तरों पर थे, जो इस बात का संकेत था कि यहूदियों की दूसरी पीढ़ी की तरह वे लोग भी मुख्यधारा के व्यवसायों में गतिशीलता की तलाश में मूल अन्तःक्षेत्र (original enclave) को छोड़ रहे थे।

क्यूबाई लोगों की सांस्कृतिक और राजनीतिक उत्थान की गति, यदि कुछ थी, तो निचले मैनहट्टन के आरम्भिक यहूदियों की अपेक्षा अधिक तेज थी। आज, मिआमी में दैनिक बोलचाल और व्यवसाय की भाषा के रूप में अंग्रेजी के साथ स्पेनिश भी जुड़ गई है। मूल मिआमी और मिआमी-डाडे काउंटी (Miami proper and Miami-Dade County) सहित सभी बड़े शहरों के मेयर क्यूबाई हैं और क्षेत्र के तीन संघीय कांग्रेसजन भी हैं; फ्लोरिडा राज्य विधायिका के लिए मिआमी के प्रतिनिधि मंडल लगभग समरूप से क्यूबाई है जिसमें भूतपूर्व निर्वासित और उनके बच्चे दोनों शामिल हैं।

अब तक पढ़े हुए को पुनर्ग्रहीत करने के लिए निम्न अभ्यास को कीजिए।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

1) लिखिए कि कैसे प्रवासन सामाजिक परिवर्तन पर आधारित है और बदले में यह अभिग्राही जनसंख्या के समाज को परिवर्तित करता है।

आगे आने वाले अनुभाग में हम लोग सामाजिक परिवर्तन और प्रवासन से जेंडर के अन्तर्संबंधों के बारे में पढ़ेंगे।

2.6 जेंडर, सामाजिक परिवर्तन और विषमताः एक अन्तर्सम्बंध

चूंकि हम लोग प्रवासन और विषमता के बीच संबंध पर पहले ही नज़र डाल चुके हैं, अब महिलाओं और उनके सामाजिक वातावरण पर प्रवासन के प्रभाव को समझना महत्वपूर्ण होगा। प्रवासन, विषमता की ओर ले जा सकता है या महिलाओं के लिए सामाजिक गतिशीलता की सीढ़ी में परिवर्तन ला सकता है। माइकल बी. व्हाइटफोर्ड (1978) के अनुसार प्रवासन एक मुक्तकारी प्रक्रिया (liberating process) है क्योंकि सामाजिक अवरोधों के एक स्वरूप से हटना महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए सामाजिक परिवर्तन की संभावनाओं को खोल देती है। यद्यपि प्रवासन, महिलाओं के लिए उनकी भौतिक और सामाजिक स्थितियों में सुधार हेतु अवसरों को उत्पन्न करके महिलाओं के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, लेकिन जब जेंडर भूमिकाओं को बदलने की बात आती है तो इसके परिणाम में बहुत सारी जटिलताएं शामिल हो जाती हैं। जैसा कि इस खण्ड की दूसरी इकाइयों में तुम पढ़ चुके हो, प्रवासन से संबंधित ग्रंथ मुख्यतया पुरुष अनुभवों पर केन्द्रित हैं और प्रवासन प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका को उपेक्षित किया गया है।

वसुधा भट्ट (2008) के अनुसार, ''तमाम गरीब प्रवासी परिवारों में प्रधान आय अर्जक होने के बावजूद महिलाओं को आश्रितों की भूमिका तक पदावनत किया गया (संयुक्त राष्ट्र 2005)। इसलिए महिला प्रवासन को समझने की अत्यधिक आवश्यकता है, न केवल गरीबी-उन्मूलन की रणनीति के तौर पर बल्कि आर्थिक विविधीकरण के माध्यम, उर्ध्वमुखी गतिशीलता और व्यक्तिगत वृद्धि और कल्याण के आवश्यक प्रवेश द्वार के तौर पर भी'' (पृष्ठ 90)।

''आर्थिक बनाम सामाजिक मीमांसा (economic vs. Social consideration)'' पर चर्चा में वसुधा भट्ट प्रवासन प्रक्रिया के जेंडर पहलू को विश्लेषित करती हैं। उन्होंने दिखलाया कि प्रवासन की संस्कृति भारत के सामाजिक तानेबाने का अपरिहार्य अंग बन चुकी है। आगे उन्होंने परिवार संरचनाओं के बिखरने और सामाजिक विषमता के गहरे होते जाने जैसे पहलुओं को भी सामने लाया। उदाहरण के लिए, ग्रामीण से शहर की ओर बाह्य-प्रवासन (out-migration) के चलते अब आगे गांवों को सांस्कृतिक पहचान के संदर्भ बिन्दु के तौर पर नहीं देखा जाता बल्कि गांवों ने भी विश्वजनीनता या सार्वभौमिकता (cosmopolitan) के चरित्र को ओढ़ लिया जिसने गांव के स्तर पर पहले से चली आ रही विषमता को और गहरा किया। ग्रामीण से महानगरों की ओर प्रवासन उड़ीसा और राजस्थान जैसे राज्यों में बहुत विकट है; परिणामस्वरूप अधिक से अधिक प्रवासी मजदूर असुविधाजनक कामों में लगते गए। ऐसी परिस्थिति में महिलाओं की स्थिति बहुत सुभेद्यता की हो जाती है क्योंकि अन्य संबंधित समस्याओं के साथ ही वे यौन शोषण का भी सामना करती हैं।

ग्रन्थों का एक ऐसा निकाय भी है जो पुरुष प्रवासन और उसके परिणामस्वरूप महिलाओं के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों पर प्रकाश डालता है। विकासशील देशों में होने वाले प्रवासन की एक प्रवृत्ति पुरुषों का बढ़ता हुआ प्रवासन है जो अपने परिवारों और पत्नियों को अपने पीछे घर छोड़ जाते हैं। सोनाबल देसाई और मंजिष्ठा बार्तर (2014) लिखती हैं कि पुरुष प्रवासन पर लिखी पुस्तकों ने महिलाओं पर दो वर्षों में इसके प्रभाव का विश्लेषण किया है। तमाम महिलाएँ पुरुष सदस्य की अनुपस्थिति में निर्णय निर्माण, गतिशीलता और आजीविका के विकल्प तलाशने जैसे मामलों में अधिक स्वायत्तता का अनुभव करती हैं। पुरुष प्रवासन की स्थिति ने महिलाओं की स्वायत्ता, उनके आत्मसम्मान और पतियों की अनुपस्थिति में उनकी भूमिकाओं के विस्तार को पोषित किया है। पुरुषों ने भी घरेलू जिम्मेदारियों का निर्वहन किया है। जेंडर भूमिकाओं के परस्पर विनिमय की इस प्रवृत्ति को

अस्थायी प्रवृत्ति के तौर पर देखा जाता है और केवल तभी काम करता है जब पुरुष सदस्य वस्तुतः परिवार के प्रधान की तरह कार्य करता है और साथ ही खेतिहर कार्यों के पर्यवेक्षण को शामिल करते हुए अतिरिक्त जिम्मेदारियों का निर्वहन करता है (देसाई एवं बार्टर, 2014, पृष्ठ 338)। इसके विपरीत अन्य अध्ययन महिलाओं के वित्तीय बोझ और बढ़ते हुए कार्य के बोझ पर केन्द्रित हैं। एक अध्ययन ने दिखलाया कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के धान उत्पादन क्षेत्र में पुरुष प्रवासन के चलते, अपने पतियों के हिस्से की मेहनत की पूर्ति करने के कारण महिलाओं के लिए काम का बोझ बढ़ जाने की संभावना रहती है (पेरिस उपरोक्त, 2005 देसाई और बार्टर में)।

जब बाहर से भेजा गया धन गांव में पीछे छोड़ दिए गए परिवार की आवश्यकताओं के लिए पूरा नहीं पड़ता तो परिवार में महिलाओं को अकेले आजीविका कमाने की भूमिका निभाने के लिए आगे आना पड़ता है। प्रवासन पर हुए अध्ययन सामाजिक परिवर्तन के तमाम आयामों की चर्चा करते हैं जिसमें महिलाओं का सशक्तीकरण, उनके लिए विस्तृत होते आजीविका के विकल्प, स्त्रियों के अकेलेपन का अस्वीकरण और जेंडर के आधार पर अलग किए गए भूमिकाओं में आंशिक बदलाव आदि शामिल रहते हैं। सामाजिक परिवर्तन और प्रवासन के संदर्भ में न केवल स्त्रियों के प्रवासन पर केन्द्रित रहना महत्वपूर्ण है बल्कि पुरुषों के बाह्य-प्रवासन और महिलाओं के जीवन पर उसके प्रभाव को भी शामिल करना महत्वपूर्ण है। समकालीन समय में महिला प्रधान परिवारों की बढ़ती हुई संख्या को पुरुषों के बाह्य-प्रवासन के स्पष्ट प्रभाव के रूप में उद्धृत किया जा सकता है। यह भी सामाजिक अन्वेषण का विषय है कि पुरुषों की अनुपस्थिति में महिलाएं विभिन्न जेंडर भूमिकाएं कैसे निभाती हैं।

अब हम लोग जेंडर, प्रवासन और सामाजिक परिवर्तन के बीच गतिकी (dynamics) को समझने के लिए कुछ मामलों पर नज़र डालते हैं। जेंडर, प्रवासन और सामाजिक परिवर्तन के संबंध में अधिकांश अध्ययनों ने बदलती हुई जेंडर भूमिकाओं और मातृत्व की धारणाओं के पहलुओं पर अवलोकन किया है। मैक्सिको से प्रवासन माताओं और पिताओं पर डर्बी (2006) के अध्ययन ने पाया कि लालन-पालन और मातृत्व के मामलों में जेंडर भूमिकाओं में यहां तक कि पारदेशीय प्रवासनों (transnational migration) के संदर्भ में भी कोई परिवर्तन नहीं आया। फिलीपीन्स के प्रवासियों के प्रसंग में भी अध्ययनों में ठीक ऐसे ही अवलोकन किए गए हैं। यहां तक कि यदि प्रवासी स्त्री पैसा कमाकर घर भेजे तब भी पुरुष पितृत्व की संकल्पना को पुनर्परिभाषित करने में किसी तरह से सफल नहीं हुए। मैक्सिको के प्रवासियों के मामले में अपने बच्चों से उनके पिताओं का संबंध पालनकर्ता की तरह ही उनकी आर्थिक स्थिति से निर्देशित होता है जबकि माताओं का मूल्यांकन उनकी भावनात्मक संबंधों से किया जाता है बेशक वह संबंध दूर रहकर बनाया गया हो (ट्रास्क, 2014 को देखो)। इस मामले में महिला प्रवासन भी, मातृत्व की पुनर्संकल्पना करने में सहायक नहीं हो सका हालाँकि प्रवासी महिलाओं के लिए मातृत्व की संकल्पना में एक और पहलू पालनकर्ता तथा आय अर्जक की उनकी जेंडर भूमिका की तरह शामिल कर ली गई। प्राथमिक देखभालकर्ता के रूप में महिलाओं की भूमिका को मातृत्व की मूल संकल्पना के तौर पर अब भी देखा जाता है। हांडेग्न्यू-सोटेलो और अविला (1997) को उद्धृत करें तो मातृत्व की देखभाल और पालन-पोषण परिभाषा को बदलने की बजाय ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने मातृत्व की परिभाषाओं को और विस्तृत कर दिया जिसमें आय-अर्जक की भूमिका को भी सम्मिलित किया जा सके जिसके लिए लम्बी अवधि के भौतिक अलगाव की जरूरत होती है। इन महिलाओं के लिए, एक मूलभूत विश्वास यह होता है कि वे परम्परागत देखभाल की जिम्मेदारियों को संयुक्त राज्य अमेरिका में आजीविका कमाते हुए सबसे अच्छी तरह से निभा सकती हैं जबकि उनके बच्चे पीछे घर पर ही रहें। (उद्धृत ट्रैस्क 204, पृष्ठ

133)। मातृत्व की परम्परागत संकल्पना महिलाओं के सवेतन कार्य में लगने पर भी परिवर्तिन नहीं हो सकी परन्तु निश्चित रूप से मातृत्व की संकल्पना में उनकी नई पहचानों को शामिल करने को परिवर्तन की तरह वर्णित किया जा सकता है। ठीक इसी प्रकार से निकोल्सन (2006) कहती हैं कि प्रवासी माताएं न सिर्फ अपने परिवारों को वित्तीय सहारा प्रदान करती हैं बल्कि अपने अनुभवों से वे नए विज़न भी उत्पन्न करती हैं। प्रवासी माताएं अपने बच्चों के लिए आशा, अवसर और परिवर्तन के आधार पैदा करती हैं। जब हम प्रवासी महिलाओं के संबंध में सामाजिक परिवर्तन के बारे में बात करते हैं तो इसका एक अर्थ यह भी निकाला जा सकता है कि निर्णय निर्माण, सूचित विकल्प और जेंडर भूमिकाओं के संबंध में परिवार और विवाह जैसी तमाम सामाजिक संस्थाओं के अन्तर्गत परिवर्तन आए हैं।

2.7 सारांश

आप्रवासन (immigration), संसाधनों के अधिक दक्षतापूर्ण आवंटन में सहायता करता है और इस तरह से राष्ट्रों के कल्याण में सुधार करता है। हालाँकि आवंटन करने की दक्षताओं में वृद्धि प्रायः बहुत ही कम होती है। आप्रवासन के वितरणीय प्रभावों के बारे में चिंता करने से विवाद शुरू होता हैः (1) क्या आप्रवासन नुकसानदेह है अर्थात क्या आप्रवासी लोग मजदूरियों को कम करते हैं और और स्थानीय देशीय लोगों में बेरोजगारी को बढ़ाते हैं, क्या वे प्रायः अभिग्राही देशों में गरीबी में प्रवेश करते हैं और भेजने वाले क्षेत्रों को उनके सर्वाधिक उत्साही और प्रतिभाशाली मजदूरों से वंचित करते हैं? (2) क्या यह संभव है कि आप्रवासन इतना व्यापक और बड़े पैमान पर नहीं हुआ है कि ऐसी क्षतियों को काबिले गौर मानने के लिए पर्याप्त हो? या (3) क्या आप्रवासन वस्तुतः लाभकारी होता है क्योंकि अधिकांश व्यावहारिक अध्ययन देशीय लोगों पर किसी नकारात्मक प्रभाव की पहचान करने में असफल रही हैं बल्कि आप्रवासी औसतन अपने घरों की बजाय दूरस्थ अभिग्राही देशों में बेहतर करते हैं और भेजने वाले देशों की जनसंख्या उनके भेजे पैसों से लाभान्वित होती है और क्या इनके चले जाने से घरेलू श्रम बाजार में होने वाली कमी से स्थानीय कार्यबल लाभान्वित होती है? और (4) वस्तुतः उद्देश्य क्या है देशीय लोगों के बीच समानता या देशीय और अप्रवासियों में एक साथ समानता?

ऐसे बहुत से संगठन हैं जो तमाम रिपोर्टों और प्रकाशनों के माध्यम से उपरोक्त सवालों का जवाब देने की कोशिश करते हैं जिससे कि प्रवासियों की स्थिति को सबसे अच्छे संभव तरीके से समझा जा सके।

2.8 इकाई के अंत में कुछ प्रश्न

1) सामाजिक परिवर्तन को परिभाषित कीजिए और जेंडर, प्रवासन तथा सामाजिक परितर्वन में अन्तर्संबंधों पर चर्चा कीजिए।

2) विषमता, जेंडर और महिलाओं का प्रवासन एक दूसरे से कैसे संबंधित है? उपयुक्त उदाहरणों या केस स्टडीज के साथ चर्चा कीजिए।

2.9 संदर्भ

Bhatt, Wasudha (2009). 'The Gender Dimension of Migration in India: The Politics of Econtemporary space in Orissa and Rajasthan'. *Development in Practice,* Volume 19(1).

Black, R., Ammassari, S., Hilker, L.M., Mouillesseaux, S., Pooley, C., and

Rajkotia, R. (2004). *Migration and Pro-poor policies in sub-Saharan Africa*, Department for International Development. London, Nyberg-Sorensen N, Hear NV, Engberg-Pedersen.

Desai Sonalde and Banerji Manistha (2014). Negotiated Identities: Male Migration and left-behind wives in India. Journal of Population Research, Vol. 25(3), New Approaches to Household Diversity and Change (October, 2008).

Gardner, Katy (2001). Global Migrants, Local Live: Travel and Transformation in Rural Bangladesh Oxford University Press: Oxford

Portes, A. (2006). Institutions and Development: A Conceptual Re-Analysis. Population and Development Review 32 (June):

Singh, D.P. (1998). Internal Migration in India: 1961-1991, *Demography India* 27(1).

Trask, B.S. (2004). Women, Work and Globalisation: Challenges and Opportunities. New York, London: Routledge.

United Nations High Commissioner for Refugees (1951) Convention and Protocol relating to the Status of Refugees.

Whileford Michal, B. (1978). Women, Migration and Social Change: A Columbian Case Study International Migration review Vol 12, No.2.

Zachariah, K., Mathew, E., and Rajan S.I. (2000). *Socio-Economic and Demographic Consequences of Migration in Kerala*, Centre for Development Studies, Kerala.

2.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Bhatt, Wasudha (2009). 'The Gender Dimension of Migration in India: The Politics of Econtemporary space in Orissa and Rajasthan'. *Development in Practice,* Volume 19(1).

Desai Sonalde and Banerji Manistha (2014). Negotiated Identities: Male Migration and left-behind wives in India. Journal of Population Research, Vol. 25(3), New Approaches to Household Diversity and Change (October, 2008).